कृषि क्षेत्र में आय में गिरावट

1880. सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा :
श्री राम जेठमलानी :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि वर्ष 1968-70 को आधारभूत मानते हुए कृषि उत्पादन का सूचकांक जो 111.5 था, वह 1983-84 में 156.4 तक हो गया था और यह सूचकांक 1988-89 में और भी बढ़ा है;

(ख) यदि हां, तो चालू वित्तीय वर्ष में उक्त सूचकांक के किस स्तर तक जाने की संभावना है;

(ग) क्या यह सच है कि वर्ष 1970-71 के आधार पर उक्त अवधि के दौरान कृषकों की औसत आय 450.5 रुपए से घटकर 365 रुपए हो गयी है;

(घ) क्या 1988-89 में यह आय और भी घटी है, यदि हां, तो किस सीमा तक; और

(ङ) क्या सरकार कृषि क्षेत्र में लगे व्यक्तियों की आय में हो रही निरंतर गिरावट को दृष्टि में रखते हुए वर्तमान कृषि नीति में परिवर्तन करने का विचार रखती है?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री श्याम लाल यादव): (क) जी, हां।

(ख) 1969-70 को समाप्त हुए तीन वर्षों के आधार पर 1988-89 के दौरान कृषि उत्पादन का सूचकांक 174 से 177 तक पहुंच जाने की आशा है।

(ग) और (घ) किसानों की आय में केवल फसल उत्पादन से होने वाली आय ही नहीं, बल्कि डेयरी, मुर्गी पालन, मजदूरी तथा अन्य गैर-खेतीहर कार्यों जैसे सहायक व्यवसायों से होने वाली आय भी शामिल है। इसलिए, पिछले वर्षों में किसानों की आय के बारे में कोई व्यापक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन 1988-89 के दौरान, वर्षा और मौसम की स्थितियां अच्छी रहीं हैं और आशा है कि कृषि उत्पादन में पिछले वर्ष के मुकाबले लगभग 17 प्रतिशत की वृद्धि होगी।

(ङ) सरकार की वर्तमान कृषि नीति निम्नलिखित की व्यवस्था के जरिए कृषि उत्पादन में वृद्धि करने तथा किसानों की आय बढ़ाने को बनी हुई है:—

(1) वाजिब मूल्यों पर कृषि आदान और प्रौद्योगिकी

(2) कृषि वस्तुओं के लिए लाभप्रद न्यूनतम समर्थन/खरीद मूल्य,

(3) बिजली, सड़कों, मंडियों आदि के रूप में बुनियादी तंत्र का विकास, और

(4) कृषि क्षेत्र में बड़े पैमाने पर सार्वजनिक धन लगाना।

कीटनाशियों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगाया जाना

1881. सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा:
श्री राम जेठमलानी:

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि विश्व के अग्रणी देशों ने फसलों को बीमारियों और कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिए प्रयोग की जाने वाली डी०डी०टी०, बी०एच०ई०, मेलाथियोन आदि कीटनाशियों के प्रयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है;

(ख) यदि हां, तो उसके कारण हैं; और

(ग) देश में इन कीटनाशियों के प्रयोग पर अभी तक प्रतिबंध न लगाए जाने के क्या कारण हैं?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री श्याम लाल यादव): (क) विश्व के कुछ विकसित देशों ने डी०डी०टी० और बी०एच०सी० जैसी कुछ कीटनाशी दवाइयों के प्रयोग पर रोक या प्रतिबंध लगा दिए हैं।

(ख) अन्य देशों में इन कीटनाशी दवाइयों पर रोक लगाने के मुख्य कारण इस प्रकार हैं:—

(1) विषाक्तता तथा स्वास्थ्य के लिए खतरे,

(2) सुरक्षित जैव अवक्रमक लेकिन मंहगी कीटनाशी दवाइयों की उपलब्धता,

(3) किसी देश के लिए विशेष मौसमी कारणों की वजह से कुछेक कीटनाशी दवाइयों का स्वीकार न किया जाना,

(4) पशुओं तथा पर्यावरण में फंसे जाने वाले अवशेषों संबंधी स्थानीय अध्ययन,

(5) कीटों पर कीटनाशी दवाइयों का असर होना बंद हो जाना, और

(6) पारिस्थितिक कारक।

(ग) हमारे देश में इन कीटनाशी दवाइयों के इस्तेमाल पर अब तक रोक न लगाने के मुख्य कारण इस प्रकार हैं:—

(1) सुरक्षित/सस्ती वैकल्पिक दवाइयों का उपलब्ध न होना अर्थात् जन-स्वास्थ्य में डी०डी०टी०।

(2) विशेष कृमियों और रोगों की स्थिति से निपटना।

(3) शीतोष्ण क्षेत्र के देशों की तुलना में भारतीय पर्यावरण में कीटनाशी दवाइयों की प्रभाविकता तेजी से समाप्त होना।

(4) अनुसंधान और विस्तार एजेंसियों द्वारा संस्तुत ध्यानपूर्वक विचारित इस्तेमाल के तरीके।

चीनी का उत्पादन

1882. सरदार जगजीत सिंह अरोड़ा: क्या खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि पिछले वर्ष के पिराई मौसम की तुलना में इस वर्ष चीनी का उत्पादन अधिक हुआ है;

(ख) यदि हां, तो उसकी मात्रा कितनी है;

(ग) क्या यह भी सच है कि इस अवधि के दौरान देश में चीनी की खपत बढ़ी है;

(घ) यदि हां, तो अनुमानित खपत कितनी है; और

(ङ) देश में चीनी की वर्तमान मांग को दृष्टि में रखते हुए अगले वर्ष के लिए उत्पादन का क्या लक्ष्य निर्धारित किया गया है और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सरकार क्या प्रोत्साहनकारी कदम उठा रही है?

खाद्य और नागरिक पूर्ति मंत्रालय में उप मंत्री (श्री डी० बैठा): (क) और (ख) जी। हां। 22.2.1989 को स्थिति के अनुसार चालू मौसम के दौरान 55.25 लाख मीटरी टन चीनी का उत्पादन हुआ जबकि पिछले मौसम में उसी अवधि के दौरान 49.49 लाख मीटरी टन चीनी का उत्पादन हुआ था।

(ग) जी हां।

(घ) चालू मौसम के दौरान चीनी की खपत पिछले वर्ष 93.33 लाख मीटरी टन की हुई खपत की तुलना में अधिक होने का अनुमान है।

(ङ) मौसम की स्थितियों और अन्य संगत तथ्यों के कारण गन्ने के उत्पादन में उतार-चढ़ाव होने की वजह से आगामी मौसम 1989-90 के लिए चीनी के उत्पादन के कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किए गए हैं। तथापि, चीनी का उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा विभिन्न कदम उठाए गए हैं जिनमें प्रत्येक वर्ष गन्ने के सांविधिक न्यूनतम मूल्य में वृद्धि करना, सांविधिक न्यूनतम मूल्य की पेशगी घोषणा करना, लेवी से मुक्त बिक्री के कोटे के अनुपात में परिवर्तन करना, नयी चीनी फैक्ट्रियों के लिए लाइसेंस देना, वर्तमान क्षमताओं में विस्तार करना, विभिन्न प्रोत्साहन योजनाएं और आधुनिकीकरण तथा गन्ने के विकास के लिए चीनी विकास निधि से वित्तीय सहायता प्रदान करना शामिल हैं।

Conference of Food and Civil Supplies Ministers of States and Union Territories

1883. SHRI KAPIL VERMA:
SHRIMATI VEENA VERMA:
KUMARI SUSHILA TIRIA:
SHRI RAJUBHAI A. PARMAR.

Will the Minister of FOOD AND CIVIL SUPPLIES be pleased to refer to reply to Starred Ouestion 58 given in the Rajya Sabha on the 24th February, 1989 and state whether any conference of Food and Civil Supplies Ministers from States and Union Territories was held recently; if so, action taken on their recommendations?